की प्राप्ति होने पर भी मैं इस शोक को दूर नहीं कर सकूँगा।।८।।

तात्पर्य

यद्यपि अर्जुन ऐसे अनेक तर्क प्रस्तुत कर रहा है, जो धर्म तथा सदाचार के ज्ञान पर आधारित हैं, स्पष्ट प्रतीत होता है कि जगद्गुरु भगवान् श्रीकृष्ण के अनुग्रह के बिना अपनी वास्तविक समस्या का समाधान करने की सामर्थ्य उसमें नहीं है। वह समझ गया है कि उसका नाममात्र का ज्ञान उस शोक को दूर नहीं कर सकता, जो उसकी सम्पूर्ण देह का शोषण कर रहा है। यह नितान्त सत्य है कि भगवान् श्रीकृष्ण जैसे गुरु की कृपा के बिना ऐसे शोक का समाधान नहीं किया जा सकता। जीवन के दुःखों को दूर करने के लिए पुस्तकीय ज्ञान, विद्वत्ता, उच्च पद आदि सब साधन व्यर्थ हैं। श्रीकृष्ण अथवा उनके प्रतिनिधि सद्गुरु ही इसमें साहाय्य कर सकते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पूर्णतया कृष्णभावनाभावित गुरु ही प्रामाणिक हैं, क्योंकि वे जीवन के दुःखों को दूर करने में पूर्ण समर्थ हैं। श्रीचैतन्य महाप्रभु की वाणी है कि जो कृष्णतत्त्व का ज्ञाता हो, वह गुरु बनने के योग्य है, उसका वर्ण-आश्रम चाहे कुछ भी क्यों न हो।

किवा विप्र किवा न्यासी शूद्र केने नय।
येइ कृष्णतत्त्ववेत्ता सेइ गुरु हय।।

'कृष्णतत्त्ववेत्ता ही यथार्थ प्रामाणिक गुरु है, चाहे वह विप्र हो, संन्यासी हो अथवा जन्म से शूद्र ही क्यों न हो। तात्पर्य यह है कि जो कृष्णभावना का तत्त्वज्ञ नहीं है, वह प्रामाणिक गुरु नहीं हो सकता।' (श्री चैतन्य चरितामृत मध्य ८.१२७) वैदिक शास्त्रों में कहा गया हैः

षट्कर्म निपुणोविप्रो मन्त्र-तन्त्र-विशारदः।
अवैष्णवो गुरुर्न स्याद् वैष्णवः श्वपचो गुरुः।।

'सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान का पारगामी विद्वान् ब्राह्मण होने पर भी यदि कोई वैष्णव नहीं है, अर्थात् कृष्णतत्त्ववेत्ता नहीं है तो वह गुरु-पद के योग्य नहीं हो सकता। दूसरी ओर, जन्म से शूद्र मनुष्य यदि वैष्णव है, कृष्णभावनाभावित है, तो वह गुरु बनने के सर्वथा योग्य है।'

भवरोग के दुःखों (जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि) की निवृत्ति धनसंचय अथवा आर्थिक विकास से नहीं हो सकती। विश्व के विभिन्न अंचलों में ऐसे अनेक देश स्थित हैं, जो जीवन की सर्वविध सुख-सुविधाओं तथा सम्पत्ति से परिपूर्ण हैं एवं आर्थिक रूप से भी विकसित हैं। परन्तु भवरोग के दुःख वहाँ भी हैं; वे भी विविध प्रकार से शांति का ही अन्वेषण कर रहे हैं। उन्हें यथार्थ सुख की प्राप्ति तभी होगी जब वे श्रीकृष्ण, कृष्ण-विद्यापरक भगवद्गीता तथा श्रीमद्भागवत अथवा श्रीकृष्ण के प्रामाणिक दूत—कृष्णभावनाभावित पुरुषों का आश्रय ग्रहण करेंगे।

यदि आर्थिक विकास और भौतिक सुख पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय उन्मादों के लिए किए जाने वाले शोकविलाप को दूर कर सकते तो अर्जुन